9.1 कथानक
9.2 वरिष्ठ चित्रण
9.3 वाचकता
9.4 बनिक्यति पद
   9.4.1 पूर्वांगित एवं कालविन्यास
   9.4.2 प्रीतीक एवं विच्छिन्न विचार
   9.4.3 मात्रांक वैस्कर्व
   9.4.4 पत्र श्रेणी एवं संबंध योजना
वार्षिक उपन्यास

विशिष्ट उपन्यास में किसी स्थान-विवेश का सम्पूर्ण ग्रामीण रूप स्थानीय विशिष्टताएँ उपर कर वा बांटा, वार्षिक उपन्यास बनाता है। इन उपन्यासों के नायक पूरे बाँट के प्रतीक होते हैं। हिन्दी के वार्षिक उपन्यासकारों ने लिखा-दर्शन, विषयक, बच्चे, बालिका, उलझन बांटि शहरों के स्थानिक रूप स्थान के बन-बनाने के जीवन की बनी कथा का शहर बनाया है। इन उपन्यासों में प्राकृतिक दृश्या, खृनियाँ, बालक-बालिकाओं रूपी गीतांि के बांटका का निर्माण को उपयोग करता है।

हिन्दी में स्थानिक बांटोपर शैली में छिंगे गए वार्षिक उपन्यास वस्तुत युग्म हैं तथा पिग उपन्यास हो रहे हैं, उनका यह विशिष्ट विशेष नियम गया है, यथा: -- (1) कलमा (1952) (2) हिन्दा सार्वजनि (1974) (3) जीवन की वापसी (1975)।

9.1 कथानक

दर्शना निकले के कृपण के पर ही वाहे उपन्यासकारों वाली कथा विभागन्द्रा हुए उपन्यास का कृष्ण माण है। वार्षिक उपन्यास के हार्दिक फूटे बांटोपरों के कारण ( बाके के बातों तूझे ) फिता, उन के समुद्र जाना और दर्शन-हाना ही हुक की विशेषता बन गई। नागराज के यह विशिष्टता है कि वह वृद्ध-व्यंग्य का हुस विश्वसित परातु पर तह शाबाङेर रूपी के वालष्य के तट वह सम्पूर्ण-विशेषता के साथ विभवक कर देते हैं। फिता की प्रतिवेदन के पवित्र बाखरुँ की विविध को जस्ते आवृत तो लहू रह जिया।

1-- गीता जैन, बाबा विश्वसंगीता और हिन्दी उपन्यास, पिलो : 
बाबार प्रकाशन, 1976, पृ 17, 27, 31, 39।
"वचनमा" के रूप में एक पालिका व्यापार शाखा का ठुकरा बारे-बारे के रित्सी भाषा विशेषता, व्यापारी सामाजिकता के बीच एक रित्सी के रूप गया। "वचनमा" के यह दास्तां के दोनों की छात्र कोशिश करने ही बात है और यह प्रयत्न किया गया है। "वचनमा" व्यापार रूप से कार्य करता है और यह वहूँ बारूँ बाल निश्चितता की शक्ति एवं बाल, सुधीर की शहीदी न्याय है। गांम में इसकी विपश्चा री पाँच की इक्षुता पर भी हारे हारे जाते हैं जलिन नहीं यह प्रकाश बना जाता है। बब वृष का नीचे कुछ खामीया का वाष्पायन नहीं दे पाते तो "वचनमा" व्यापार से नहीं हो जाता है। अन्य व्यापारिक उपन्यास की तरह न होकर इसकी बाजारमात्र खुलकर इसकी व्यापारिक सैली का समकक्ष अपनाया बना देते हैं। घटनाज़ो का पी घटनाज़ो नहीं है। जी घटनाज़ो रूप से मुख्य कथा के गहराई में ही स्पष्ट है। "हिराना लिखित" की कथा क्षीरात गांम की कथा है। मात्र के बन्य सूक्ष्ण गांम की तरह यहां भी विश्वास है, वन्यविश्वास है बाल न का वस्तुनिष्ठ विमान है। कथा व्यापार सुखम है बाल घटनाज़ो नी न के बारातर है। "हिराना लिखित" गांम की छायां बाल माँ-आप की इक्कीती कटा है। उसके फिसा, बिस्फोट दुस्सिंगटन के यहीं गांम पेड़ चार का काम करते हैं। इसके विन इसका के पिसा की नौकरी बुझ जाती है वाल परिवार पर दुःख का फाटा बुझ पुलिड़ा है। "हिराना" का परिवार दुस्सिंगटन के माइंग भारी बाल के कस्बे में बालर रहने लगता है। इसका के पिसा बीमारी आएं के कारावास में काम करने लगते हैं वाल हिराना के अंत मुलाक बनाने वाली पृथ्वी पर काम करने लगते हैं। बाल के समस्त में बालर पर परिवार का हर बाल शैक्षिक वात्स्यायिकी और स्वाधीनता बना रहा है, यही बिठाना उपन्यास का प्रस्ताव है। "हिराना" के निम्न "नामांक व्यक्ति" समस्त, "हिराना" का नाम बारात देता, निम्न का पाँग बनाना, "हिराना" की तान का गंभीर होना देखी लाखी घटनाज़ो कई कुष्ठ हैं जिस सारा उपन्यास सत्ता कर रहा जाता है।

"पाँग की बाली" का कथानक मात्र विमान है बाल नी लेखन के
हिन्दु-मुस्लिम के (बोली होती हैं) वापसी काव्यार्थी की मानसिकता पर
वास्तविक उपन्यास है। बाकी उम्र पर माता भी रहा। उसकी बड़ी माता की
भिन्नता पैदा होने के कारण संगी वास्तविकता रवैं फॉर्मार के वायुवात वह
वपना गार्ड नहीं बोल लगा। उपन्यास कुव आकस्मिक घटनाओं के उत्साह कर रहा
गया है।

9.2

वास्तविक

'कठनाया' उपन्यास ई की पात्रों का चित्रण 'कठनाया' के ही
माध्यम से हुआ है। यह विस्तारक 'कठनाया' के वास्तविकित्व का रूप उस के
बाकी पात्रों के साथ मतालिगा के माध्यम से विविधता खुला है। 'कठनाया'
कथावत्रता के साथ वापसी का प्रवज्ञ पत्र मानी है। 'कठनाया' ना का बड़ा
मात्रा और मात्री है। वह ऐसा कुद्र वसा वास्तव है जो उस के परिवार की
छाती गरीबी रवैं विविधता को दुर कर दे। केवल वार्ता के लिए क्या वापसी की
भी बात उसी ही स्थानीय नहीं भिन्नता तो जबकि उससे वास्तव रीढ़ दंडता है।
वह एक सी.exc पत्र है पर उसे ई कुल होता नहीं है। वह क्वता है, 'हूनियाँ'
की बातों को समझने के लिए जिस पक्ष की उमर की अफस नहीं, यह यहाँ नहीं
थी। फिर भी होता-तोता दो वर्ष तो थी। वह काल तो था। घर भाग पर
मां की बाल कृष्णन मुखा का बार्ता तुम्हें देखता तो वपने गये जिनकी हल्की
नाक बर कर करता को पड़ते नाटी है। 'कठनाया' वपने वास्तविकित्व का
बढ़ाते हैं वपने परिवर्त, परिवार और संबंधित पत्रों का नी विविधता करता
है। इसके विक्षेप होता है कि वह वास्तविक नहीं, पूरे रूप का प्रतिनिधित्व
करते बादल वपना है। वह वपने गये और वंश की इजात के रूप के कठोर थाना
पूर्णता के तैयार हैं। वह वपने वंश की वास्तविक रूप करता है और
वपने मालिक के प्रति भी बहार है। उनकी बनपुरियता पूरी है।

-----------------------------

2- नागालून, कठनाया, पुस्तक, p-33, 46
के साथ इनके बारे काम किया है। वह भर बाकी थी अपने गांव है बुझा खता है। वह बपनी वस्त्र है जब हदार बुझा है तक उस का रौन-रौन बपनी लघुवाली वस्त्र को धक्कर रोमांचित हो उठता है। वह स्तन है, "बबन के भूल में बान रोमने उठता है, तो वह बोला का नशा घर पर ब्यापार दी जाता है। अगर है है इतिभास का बुझा हो गया है, यह है बूढ़ा खत है।" भेरे हाय हैं बूढ़ा हाय के बूढ़े-बूढ़े हरे-हरे मले-मले मनोरंजक पीते हैं। 3 कलनमा ने बपनी परिस्थित शुरू किया है, "बूढ़ा हाय की उड़ यह भेरे हाय मर गया। परिस्थित नीचे मा बाली बूढ़ा एक बूढ़ी जिन्हिए। नी हाय लब्धा, नी हाय चोप्पा पर या, दो बुढ़पीं बाढ़ा। साथी बूढ़ा-सा बागा था। बूढ़े बूढ़े अज यह बूढ़े ( बिंसवाली ) बूढ़ी थी।" बाली ने मलिकाहन को बाझावन का जिन शब्दों में परिशिष्ट किया है, वह कलनमा, उस की बादों रव से बूढ़ा की बाबू की स्थिति, स्थान का बिरत्न करने के लिए विषय है। वह स्तन है, "नहीं मलिकाहन, इसी का बात करिक ता। मर बाझावन भुटी मर है बाबू का पाल नहीं बाबू। कौशिक, महान, काम, सांभा, कावन बाहर जिस की भी रोनी देखी, दुशी-दुशी ला लैणा बूढ़े या बुढ़पीं पानी भरकर सत्तों की सुनी तेला उठ भायागा, भुढ़ा की बुढ़र है, तमना की नहीं अदा, मलिकाहन। - निषेध, वफल, गंभीर होगा का शोषण करने के लिए अधिकारियों के पास अपने उग होते हैं। वह सफा पर दूर-दूर रव से बिनाल बाबू हो जाते हैं। ही ही थेरास यह मरे बाबू ने बाझावन की बढ़ी न होना चाहिए है। मरे बाबू के साक्षात् की भी बूढ़ी बुढ़ी है बाबू करने है, तभी उदारवर्ग दुर्दर्शित है, "जो बिंसवाली ( गुलाम ) पत्ती ( स्वाति ) की प्रसन्नता रुकता है उसके लिए बूढ़ी या बुढ़ा की बाष कसी है बूढ़ा ही अशावर बाबू। बूढ़ी का उपरा जहरा, गिरता है तो बाप हो जाता है। सम्भावना कह यह है जो दस बाबू को

3-- नागाहै, कलनमा, पूर्वाक, पृ 116।
4-- कवी, पृ 3।
5-- कवी, पृ 16।
पाकर दुबे कर वाता है - - - मान तौक्त, बापके बिवा नाव निवा
बमैन की वजह है वैर वाचन की माँ उन्नी बमैन वापके के सैला है तो
hोता है क्या ?° शेख ने इस बारे परिक्षा का चरित्रकृत बढ़ा वुका है
किया है। मलकावन की बावाकीता करने वाली दुबे हुक्का नौकरानी, नौकरानी
का मस्तमिटा रुप वैर बिहराको वाला का बढ़ा गन्ना र विज्ञान किया है।
नामाङ्क से "कल्हनमा" में एक पूरे पावलीय किलम वैर उसके परिवेश को
चरित्राकृत किया है।

"हिरहा सावरो" का चरित्रकृत भी विरहा के माध्यम है सम्पन्न
हूआ है। विरहा सावरो के बारे परिवेश बैटे छुट क्या है, "गाव की बी१ बसा
में पाने के कारण वहीं काटी मुक्त पल्वूर का। में बेंहरे पर अचान नियारान के
पुता हुआ था - - - - - की में उम 14 वर्ष की कूसूर हे दुहू थी कि में
बारे गाव में बाप का विश्वास बन गया। वेरा नाम नवी है, भेकिन में भरी
बाप "विरहा" के नाम के प्रस्त बो गई।" 7 सप्तर्थता विरहा अपने स्वाभाव
के प्रति नागर, वाप की दुग्धता होने के कारण दाराह, निश्चित रक्षा
बिया दुटुर है। उस के मां वाप उस की हजारा पाते हैं। वह शा उसे के
वाल की नागाल है भेकिन शहर वन वाकर का बशकी है कि बारे बसती होते वा
रहे है यहू तक कि बारे और बुड़ा था। तब वह शा भावानी करने लगते हैं,
नाक्षरते करते हैं, उन पाने के पाने -व्यों और प्रैक्षन करते हैं। इसीलिए
किया एक हम्प्ट के सम्पर्क में वाकर गपारी हो जाते हैं। गाव की बालीता
पांड कर नी वफपे पुन को पालता है। हसी स्वाभाविक वह अपने वाप में कहती
है, "वफा बठक गाय था, में बढ़ा गई था, पाई बढ़क गई था। भव के कब्जे के
वलन वलन कारण दे तेकिन बढ़े स्थी है। में अपने दीक पूरे करना नाशाती है,

6-- नामाङ्क, कल्हनमा, पुष्कित, पृ 16 ।
7-- महर चीतान, हिरहा सावरो, पुष्कित, पृ 12 ।
बो पूरे ही रहे थे। उन बच्चों-चिंत बीढ़ होती थी रही थी। सुलेहा की हर 
स्मृति में उस में बूढ़ा रही थी। उस बूढ़ी हुई थी। उस ज्यादा थी कि उस 
फूट पड़ गई कभी-कभी। उसकी बुद्धि थी। उसका बच्चे के बाल 
कार लगे है। "बच्चों का वापसी" का वरिष्ठक हिन्दू पुरातन के कांथारे की 
सामाजिकता के समस्याएँ में उम्मीद है। "बच्चों" ही उस में प्रमुख पाठ है। "उन" 
के बच्चे है बच्चों का परिवार पाठकों को इस पुस्तक मिलता है कि कहीं बच्चे 
है "उन" बच्चों के कल फूट कर उस के पास वालों को लगता है। यानि उस बच्चे 
का बच्चे वह वह जाने कहाँ यहाँ खुशी क्या है। किसी एक ज्यादा पर तिक कर नहीं 
रहता। साथ है। पहले वह हो उस का सा ज्यादा भाव है और वह वह से वार 
चढ़ देता है। वह उसके खाँ सोहरा में वार हो चढ़ देता है। उसके पश्चिम हूँ-हूँ-हूँ या 
वार उसी भी वह वह सोहरा वार है बब बब बब वर्षों के कवर्त है। बच्चों 
कहीं भी रहें साथ उनके दो स्वर घर के ज्यादा भाव है औसत है। उसके 
बच्चों के लाख तक की पाठ्य पाठक के मन पर दिखा हो बच्चे है और उसकी 
बच्चों वार्ता के मीडिया क्रिकेट भाव हो बाहर है। "उन" ने 
बच्चे पाठकों "बच्चों" किए। बच्चों उपर वित्त, बच्चे में विपण और हसीना में 
वार्ता की क्रिकेट परिवार पढ़ा दिया। एक वित्त पर वह वार्ता के एक व्यक्ति 
राजकीय का परिवार में फूट कहता है, "राजकीय की बायमड के कई दूरदर्श 
बिन भी है। मुकर्मा कंट्य का उसी अभियान का कला का कला पुकारता है। उसके वर्ष 
पैरेश की नी 

8-- महार चौहान, जिन्ता सावरे, पृष्ठ, पृ. 141
9-- बहु उज्ज्वला, बच्चों की वापसी, पृष्ठ, पृ. 10
बातें हैं। ठेलके रेखा मीठा तो सादे इस बार ही बात है। 10 ठेलके के 
इस विशेषता में क्यों क्यों सामूहिकता की बुद्धि है। यह बात है,
• हर्ष के माहे में स्रोत में ही वास था। उनका स्पष्ट था कि जानिए और गर्वार 
मुक्तान स्पष्ट नहीं थी तो वजह है। यह ठेलके के लिए मुफ्ते बनी और उन्होंने भी पाकिस्तान 
का फायदा फूंका। जाना और ठेलके के लिए मुफ्ते हो गई बनी है। 11 यह बात क्या है 
यह विशेषता है कि जानी है। क्यों क्यों तनाव निरंजन तरली मुफ्ते का वह 
बनाने का क्या का दर्शन निरंजन नहीं है। यह बात है। यह विशेषता 
इस हिंदु-मुस्लिम मानसिकता वसपाने पूरी ताराव चर कृति ही उपरी है। 
क्यों-क्यों दूसरे पात्रों का वास्तविक उप-मुफ्ते बनियावल नहीं हो पाए, हवली 
'भी' की एकांतित है। है। 'भी' के उद्देश्यक जन्म पात्र तैयार है, हर्ष की 
विशेषता, हर्ष का माहे इवव वच्चा वादी पूण उपर कर है कि अन्य 
उसले 
उपर्युक्त उपलब्धि में पात्र-रायक है तथा काम लिया गया है। 'कल्लपना' में मुफ्ते पात्र 
लीन है: -- कल्लपना, 'उसकी विशेषता इवव पानी। रेखा पात्र परिवेश वाहर रास्तियों 
के बनापर उपर कर तारा है। 'हिंसा समारोह' में भी प्रभु तोन ही पात्र है -- 
हिंसा, व्यवहार और पात्रों की ही पात्र गोपन है। हर्ष की मुफ्ते पात्रों का 
विशेषता स्पष्ट रूप में है। हालांकि हर्ष स्पष्ट है। जिसके बारे 'भी' पात्र स्पष्ट 
है जो विशेषता का भी सम्पूर्ण विशेषता नहीं हो उत्तर शक्त है। ठेलके 
विशेषता के 
पात्रों के सामूहिकता एवं मुफ्ते मुक्तान के वाचार-व्यवहार के विशेषता भी 
विशेषता का है। कल्दश या पात्रत मानसिकता क्यों सामूहिकता भी 
तिरहुत हो गई है।

10-- केश उत्तम, जाना की याद, पुनः की, पृ 27।
11-- वाह, पृ 24।
वाचिकता

वाचिकता ताप मुद्रा, उपन्यास का विषय किसी के ग्यान के विषय में निर्धारित है। कल्चर उपन्यास के एक एक शब्द है दर्शनी किच का विषय परिवार, विचार, रंगन्त एवं पौरुष माया फलकता है। यह विज्ञान परिवार में एक बार निर्माण की निरीक्षण के झुकार, दूर और बुध वार के दूर फूल प्रकृति का दृष्टि प्रतिपादन है। वाचिकता संक्षिप्त है, "वस्त्र कुंद दूर पर दीप देवी पर दयालु की माया रहती माया नहीं है। बाप रे।"

इन प्रकार की अभिनवता को डायवाची कर यह भी भाल हमें निरीक्षा एवं जाना हो गया है कि एक सावरण मधुमेश के तहत शीता मूल से है। कल्चर के वैश्विक का वाचिकता के साम्य की दिशा, बनाने मैथिलों के सी-सैं लोना बौद्ध विषय द्वारा गृही, निर्माण का विस्तार द्वारा किसी की बहने की दृष्टि में उत्तम है। यही तथ्य है जो इस परिवार की वाचिकता को नहीं करते हैं। गांव के दृश्य परिवार के दृश्य की आकृति परीक्षण के नीतियों है के इस उपन्यास में वृन्द उपग्रह है। वाचिकता चाय सरिये के घर में इस गांव का भाव काला हुआ होता है, "वस्त्र कुंद है "वैदिक" वैदिक वैदिक न-वैदिक बनी चुली को न-बनी वैदिक बनी चुली थी। गांव, क्रम गांव, बाप, पाप, बोर बोर बारापाप, यह सब साधा बात बा था। बस या चुक सर (पैरौ) वांग का बाग। वांग के कुण्ड मूर्दण है।" इस गांव का विश्लेष परिवार में प्राकृतिक रूप पर कथा बाबू उपर है। वैदिक ने बांजन के माध्यम के इस बाबू का दृष्टि-दृष्टि परिशिष्ट के है। जहाँ है, "दर्शनी किताब तीन विचारना" जैसा हुआ है -- सदर, समस्ती पूरा बील मुक्ती। सदर बील मुक्ती बात के विश्व बहुत फल जैसे जिसदार है। बला (वारिश) उपर बाबू के बान्त हैं ही जुल नामा में, कल्चर, पूरीति, मूर्दण 3।

12-- नामा में, कल्चर, पूरीति, मूर्दण 3।

13-- वही, मूर्दण 6।
ही बात है। रोहिंगी नबाब (सातवां) में कोई पूरा केला था ने नये पौधे न हार छोटे के तरह छायाते रहते हैं। आँखों को तर करनी वाली दैवी दिलाश की तुम धर करना कीना। * - इसे स्मरण यहाँ तो यह है कि गैर वाले बगल विज्ञान के लेखात्मक रूप में बुझा हुआ है। इस वार्ता विज्ञान के फलनाथ के विभाग में बाजन की बैठनुरण का पखंड इस प्रकार है, "वार्ता के फिरने-की बेटी की विस्तृता (रसाता) कूट रही थी। विस्तृता न तो लगाता है, न चढ़ा, कपड़े के शीरे की बर्म तुम कोरी ने की भावत खड़न हो तो देख हमारे यहाँ विस्तृता क्षयार्थी। -- --। इक्ष्वाकु मालिक के घर की नींवर की बैठनुरण, एवं याबीरिद ने के बवहर पर फिरने वाले कपड़े हैं के फलनाथ की विशिष्टता विशिष्टता दी गई है। संकाराम के रूप में बौधवास, गाँव की विशिष्ट रोकथामी बादल सुखद है विशिष्टता छुँन है। "हिसना बाँसी" यह गैरविचित्तर पत्रिलेख पत्रिलेख और और विभाग रूप से विशिष्टता है। "हिसना बाँसी" गाँव के चाकियों संकाराम का परिस्मृत शही छुँन है। गाँव के लोगों दो ही हैं की दृष्टि पर बावा सितारा का मिन्नदा था -- -- यह बवहर कहाया कहा करता कि उन क्षति यहाँ सितारा का मिन्नदा कितना बुझू हुआ था -- --। ऐ "हिसना" वर्षा घर का वर्णित करने छुरी कहता है, "हमारी की प्रतिक छुट्टी बीती थी। इस से हर की रंगर है। उस यह छुट्टी पर बानी है देव नहीं लगती थी। बाबा के एक बीती उड़ती की नींव के पास लाकर उस की पौछी धारी है फुर्के फुर्के यहाँ बानी करने का कौशल कर देखी थी -- --। गाँव की रोकथामी बनी थी उसी पुरातन-पुरान की थी है। इस स्मरण करती हुई हिसना कहती है,
"गांव में बची थी कई ताजियाँ पानी हो रही थी और होने वाली थी। पानी में ही क्या हो गया था। तिसरी वापस वह बाहर करता था कि उनके दरा-दरा (कुख्या-कुख्या) हुए तो उन्हें व्याप किया बाहर हुआ।" - कूल परिसरार के होग सहर बांटे जो वे बताते: उनके पर की तुफानियों बड़ी बड़ी पेड़ तक के बादः भी रह गयी थी क्योंकि के दाँ-विवाह का विरोध करने लगे थे। की जाते के फ़नाने पर भी तैल के पार्श्व फ्रास्ट होता है। बांट के इस बांट थे तिसरे वाले पानी पानी पानी नहीं करता है, वे साइट को ही बचा पर उस तरह चढ़ाते हैं कि पानी पानी के वापस कर ही नहीं पूरी। वर्सान के विशेष में बांट से लाहौर का टोप और चादर पर बॉरा ठाँचा कर बरसात नहीं बाँटते है। बॉरे पर की कई वस्तु लगी बड़ी बड़ी नहीं बांटे पानी है। इन्हें खाके नाना तुफानियों कानों में बांट की ताजियाँ या बाहरासी के पूरे पानी लेकर हो जाते हैं। —

"बांट की वापसी" का परिवर्तन है कि गांव का है (तैल ने नाम नहीं कटाया) कांटा हिन्दु और मुस्लिम दोनों रखते हैं। तैल ने बांटकर: मुस्लिम परिवार का ही विस्तार किया है। यह विस्तार मुस्लिम परिवार में हैम फ़नाने का है, कैरेम फ़क बने हुज्जा की टोपी का इरादा, वालाओं का खेल, गहरे बूंद हाता, बच्चे का बांटा बांटा मास्क है। मुस्लिम राजपूतानी इलाकों का खेल विवाह, यह विस्तार बांट की वापसी का गर्दना है। यहाँ :— होगी दो दिन नहीं तक अदालत के दिनों और तब पर। पाकिस्तान आग्रह हम होग सही नहीं होगी, तो जाने हिन्दु और मुस्लिम बांट।

बांट मार्ग। यह भी कोई वात हुई कि जनमत के पने के बूंद बूंद हम दोस्त हैं।

20--- पाँहर कौलान, दिल्ली सावरी, पूर्विक, पु. 17।
10--- पाँहर चीतान, हिस्ता सावरी, पूर्विक, पु. 28, 32 है, 41, 45 है, 48, 50 है, 60, 81 है, 86, 88 है, 95, 103, 109, 112, 117, 121, 123, 126, 170 है, 173।
भलते रहे।  
लेकिन यह भनिए कि अन्य लोगों के लिए यह नहीं रहे।  
21 इस दृष्टि से ध्यान को बाहर करने के लिए इसके विशेषज्ञ ने परिस्थिति, जनांज, तथा इत्यादि का कारण चिन्हित किया है।

9.4 विभिन्न प्रकार

इन वार्षिक उपन्यासों के विभिन्न प्रकार की विविधता उन की पारंपरिक परवरित्त में निहित है। यह माना गया है कि यह दृष्टि भरोसे है कि निकट है। यह ग्रंथ लोकसमुदाय, विशिष्ट ग्रंथ वृहदावर, कथा की खंडना एवं विश्व वस्तु को गहराने का काम करते हैं। "कलनाम" का आरोप कथा उद्वौधन की एक कार्यक्रमिक सिंच की आवश्यकता है। "कलनाम" कहता है,

गायौर के लिए नायिक के, जब में तुमसे नहीं कहुगा भैशंक। पेशे तरा रो रे कर कहने लगा। दूर धर वाचा बाहर, किसी तो दुबिया का जान किसी भी।

सत्यक अगर उसके लिए लिखा, हृदय या खुश्य जो हो वहीं कहीं पूरा एंड दुआ।  
23 इस उद्वौधन की बज्जे कथा में विश्वसनीयता, शर्त एवं विश्ववस्तु का भाव है। यह उद्वौधन की "हिरन सार्वो" एवं "झाकों की वापसी" नहीं है।

9.41 पूर्वार्थित एवं काठविभाग

"कलनाम" अपनी कथा पूर्वविभाग में कहता है। यह कथा अति विशाल तथा कथी वर्तमान के समस्याओं की कोशिश में कुछ कर चला है और उससे कथा का

21-- बही उद्वौधन, पूर्वक, पृ 20 ।
22-- वही, पृ 28 ।
23-- नामांक, कलनाम, पूर्वक, पृ 31 ।
24-- वही, पृ 83, 63, 71, 93, 152, 160-161, 174, 193 ।
विनाश कहलाता है। इस पूर्वकालिन नं फिता का बनाना है बाँध कर मालिकों
के फिटना, बादबुदार की न ता वहने पर महत्वहल है सबा पृथक, सामग्री
बाई अर्थस्था के बाव-पेक, और बाजारों के वालापुरी-बलापुर ताफ़िश है
थे स्मृतिया क्रमार्ष बाराहै। कुशोभेंध प्राणी का कहना कर प्रयोग किया गया
थे। कथा-संस्कृत की विपुलता को चित्रित कराने के लिए कहीं कहीं "क्लासिमा"
के संयोग को संवर्तित करते थे कथा कही है।

"हिरना सिदरों" की कथा पूर्वकालिन पद्मते मंगलार कही नही है।
कुशोभेंध ने धर्मता-विकास एवं सुधिकारादि के को विशिष्टता बाति है, यह यहाँ
भागान तारावक के वस्त्र के बैचह के नहीं बा पाठ। इसका उपन्यास म यह बिन्
वितरित वैष्णवस्तु रूपों की दृष्टि संयोग के उन्हीं न आधारी स्वस्तिकृत
कही है। हबंलाक्ष इस उपन्यास की लोकता एवं सम्पूर्ण उपर कर उपाय
नहीं बन पाठ।

"द्राक्षों की विनाश" में उद्योग मुख्यते नहीं ते स्वस्तिकृत
सीतारा बिद्वहन है। यह सीतारा पौर्णिमिक पद्मते के कारणा विभेद रूप है उपर
कर बासा है। कुशोभेंध प्राणी के हैल्से के विनाश के कर के बिनाश रूप
स्वस्तिकृत सीतारा पर हो बार-बार चित्रा है। द्राक्षों के शीश के विनाश रूप है
विनाश की उपर कर बाही है। कथा का प्रारम्भ बिन्न वस्त्रम विवर्ध होता
थे, यह कहीं कथा के शीश का रूप है। द्राक्षों का पत्र बाही है, जिसे फूलाने
के लिए द्राक्षों के बिनाश "द्राक्षों के बिनाश बाराक की स्वस्तिकृत" में हो बाही है। "मे"
शुक्ता है, "शायद हस के शीश का तालक सिय" द्राक्षों के नहीं है। बहुत धराप
दूसरी वार्ता भी इससे बहुव छुट्टी है। पुराने बीते छूट चाणा वनक तकर्क में सामने वार्ता है और 'मे' उन्हें ठीक तरह से फड़ हुए हैं सब, इससे फंसे ही वे एक फातक दिखाकर दुख हो जाते हैं। **इस स्मृत्तव्याक्तिक के कृपा गर्व कामर, कृपा गर्व का अंत्यार्थ, कृपा वस्त्रा द्वारा आई की फ्राइडा और हश्शिय माई, वस्त्रा वार्ता उस के पास तक की है और कथा के वामित्यक्तित कैन्मायक की गहराते हैं।**

9.42 **प्रतीक स्वर्ण विषय योजना**

उपरोक्त उपद्यासों की प्रतीक स्वर्ण विषय योजना भी गम्बड-पनकैल के बनकूल बन पड़ी है। 'कल्रमना' के प्रतीक वर्त्तमान स्वर्ण ह्वर्णकृतित के बनकूल है जो क्षमात्र परिवेश, सर्जकार स्वर्ण स्थितित्व का गहरा स्वर्ण वाला के स्वर्णीकरण है। 'कल्रमना' के कुछ प्रतीक स्वर्ण है।** जिनके का छोटा छोटा ( पाँचहर का शाही भाषा के अपने दौरों के ली गोया ),** 22 क्लू ( वफरारा एवं रवी सूहा का प्रतीक ), 30 लालसा-मैनें की तह (लालसा भूमि), 31 शरीर की छाह बार्श ( कल्रमना का दुसरा ), 32 सप्तर मालाक ( मूल बाजू के बेहतरी की स्वस्थता), 33 रसीदा करा कुम ( सारस-वैष्णव रवी वालुधर ), 34 ये दुदुर, ये दुदुर ( सारस राजी), 35 हाथी बाहर राश पर कुम ( मूलाश का प्रतीक ), 36
टहलिया वैर सुखा बास (गाँव की गृहीत कवासी) और बन्दन की पिसकर कंपार पर लण्डा (वांतन) बाबू हिन्दी दुनिया प्रेट्टी है कि कङ्घ गाँव-शहर के दुनिया कृप्या मस्ती बफी पल्ली एं लहराती होती है।

'हिन्दा सांसेथी' का कोषक प्रश्नहास्य है। वहीं इस उपन्यास की नाथिका है। वह अशी बृहस्पति दुर्गा चंदन है हस्ती तिल उसके बचा ने उसका नाम 'हिन्दा' रसिम्या है। 'हिन्दा' की तरह भूति मरना 'हिन्दा' की बापरिक विशिष्टता है।

'श्राकों की बापि' की प्रश्नहास्य नाम्य है। कौशल की 'भैं' वे की मानसिक विचित्रता को प्रश्नहास्य धारा है विचित्रित किया गया है।

विष्णु योजना भी 'कलपनम' की व्री संक्लन कर पड़ी है। श्राक विष्णु। के रूप वे मुंगा बाकी पिनान, सहा वात, पूरे दुनाका का बिलुवार वापि 'कलपनम' की व्याख्यात मन्दिरती को उन्हीं न सहायक हुए हैं। 30 स्वयं विष्णु के रूप मायिक के घरी का प्रभावितात्, उन्हीं सहायता वे करता है। पूंजी विष्णु का भी एक उदाहरण दुर्लभ है, 'नर्तक भरे माथे पर वर्णीयों का वेसास, रात दुर्फरी, गाँव पर, टैट, बाण, बुध, पीठ, वापड़ सब फराक्को। सब छुए, छुए लगी दुली, लगी बीरे -- ।' हस्ती प्रकार नष्ट विष्णु के रूप वे गाँव का परिसर बाबीया हो उठा है। 'कलपनम' स्तंभ है

'हैरिस, विस्तार, सलाई या कीर्त के प्रजन गुणनते रहते हैं या फिर फिरि'
चौपाई पर पुजार के बीच पर भट्टे छू उन्हें तुम बनी फली और विभाग पूजने पाबीज़े - - - ।

42 कच्चा बालक के समति विभि तो और जी विषयकी धर्म संज्ञा है। यह वचन नहीं नविन पुलक की सहरार की फली रात की याद की।

43 राज और राम की मना अहिर की भव और सुरक्षा की फली रात - - - लाज और हर का मंदा क्या पुजना - - - ।

44 यह विभि विभि है कथा के विभाग्यक्ष फला में बालिका निर्दार वा गया है।

"हिंदा सार्वदेशा सुमित्रावलीकृत है जैसक विभि के रूप में उभर कर कथा के विभाग्यक्षत गर्भि में नहीं। लेकिन केवल केंद्रित कथा है।

42 "हिंदा" की ज्यादा विभि की रूप में उभरी है।

43 धूम विभि के रूप में "हिंदा" की वार्ता की महदुख की फला, काल में कपड़े की गरीब वास, कों ठाकर खिद, धरी की तत्वांत पति के बिन पर बुढ़के के एक सिरे के दूसरे सिरे के बुढ़के, सुकी पिरिया का स्वभाव का काना, तार का दंगा, वन्मा की वस्त्रनाक और मयगीत वार्ता, पुरुष में पैक बना ब्राह्मण वार्ता ही उठते हैं।

44 सुमि विभि के रूप में ब्राह्मण के साथ ज्यादा, जहाँ है हार्दिक लाना और ब्राह्मण के रूप में फुड़ा वार्ता में "हिंदा" के पान एक उभरते हैं जो कथा के विभाग्यक्ष वातावरण है कथा का विषय-स्थिति के बीच है उभरते हैं।

9. 43 नाषा कीज़ें

उत्पूलक उपन्यासों के विषय नाषा-मूर्यों ने इसकी वाचिलमा।

42 नागाचुं वलशनामा, पृष्ठक, पृ 64।

43 बही, पृ 13।

44 परवहु झोंकर।
को तो गदराया ही है इसकी ख्यात स्त्रात्मकता में मैं वांछित्रिक ही हूँ। इस शब्द कहाँ खाया? सह रस-पाक में विरोध उत्पन्न करते हैं तबके पावित्रित्त्व के बैठे खुले ही कथा की सीवणा को बढ़ा देते हैं।

"बघरण" की यह गंभीर सम्भावना के कुछ शब्द दुष्कर्म हैं, यथा:--
लक्ष्मी ( लाल की बुंधिया ), शुभावम दुर्गा की नृति ( मोटा बुझाल ), करकी ( खेत की शाखा का बाप ), सबूत ( दास का धराना ), अंखारा हाथी ( पति को जाकर राज चर के रूप में बाजो बना ), शुरु बैठका ( शुरु लगाने बाजा ), जंग निपुंश क्षितिज ( मिहारी ) मीठा ( यह नवीन, जिस में धाता नहीं उगता ) किंतु बाटी ( शुरु के पृथ्वी की बनी बाटी ), करवान ( खेत का बाम )
है पाल ( बिल्कुल ठिक ) पपनी ( पफ़क ) बाँध।

"हिरता सार्वी" में मैं शुद्ध सार्वी के व्यक्तित्व श्रद्धा का प्रयोग किया गया है। इस माण्ड्र दुर्योग के सन्दर्भ में इसके के शब्द दुर्योग हैं, "हिरता सार्वी" की तैयर शीतल वह हलना बढ़ा है। इस नहीं सीक था।
भेद उपम्यास पर पहला और सब है। बढ़ा इसका यह लागा गया जब की जीतो बौढ़ी बाढ़ है।" ही प्रजातियों ने उपमन्स की श्लाक्ष्ठि एवं वर्चितस्म गीत्य दिया है। हस्के कुचं तमरु दुष्कर्म हैं, यथा:-- टुंगिया ( टुंगिया )
भितान ( दोल ), निम्बार ( भूजिकाह ), ओपर का ( उसका ), वगा ( रकी ), तोर हौस ( तेरा बादी ), फार बाख ( करा ), खानवा ( साथी ) मोता ( मृदा ) कावर ( करा ), किन्योक्चर ( काँडकर ), कोह ( कोई ) बांध।

45-- मकर-मक नगराहु, बघरण, फूसिक, पृ 9, 10, 16, 21, 23, 25, 35, 54, 100, 102
46-- मकर चिलान, हिरता सार्वी, फूसिक, पृ 71
47-- वधी, पृ 12, 16, 22, 29, 30, 50, 69, 77, 103, 115, 118, 183
9.44 पत्र श्री कै संबंध योजना

"कल्याणम्" में पत्र श्री का प्रयोग नहीं है तो इसके स्वभाव कथा का एक उपकरण को लिए उपकरण की स्थिति करते हैं। इस संदर्भ में मात्रक कार्य और बातचीत, पुष्कर मात्रिक और वेदिक, पूर्व बायु और उनकी पत्ती बार्द जैसे मध्य संबंध पार्श्व की विश्लेषणात्मकता की उपाधि हैं।

"हिंसा सार्वेको" में पत्र श्री का प्रयोग नहीं है। इस संदर्भ में मात्रामात्र क्षात्रक्षत्र नहीं है तथापि ये हिंसा, पदा, पुस्तक, पुस्तक बार्द पार्श्व की मात्रामात्र स्थितियां के प्राप्त होने के प्रति बार्द करते हैं। "श्री कै की वापसी"
पत्र श्रीक का मर्यादा प्राप्त किया गया है। इस उपन्यास का प्रारम्भ के पत्र श्रीक ही होता है। 'श्रीक' गार्व से अपनी बहिन की जो जो पत्र हिस्तता है, वह स्था के विश्वास पूर्ण बन आते हैं। इसके विस्तारित हविज नाथ के पत्र हैं जो वह पाकिस्तान पूर्ण कर डिक्के हैं। ये पत्र उपन्यास की सामाजिकता की प्रथाओं हैं। 'श्रीक' के मस्तिष्क में श्रीक के ज्ञान के दृढ़ता रहते हैं जो उसे बार-बार भीतों में लेकर उसका काम करते हैं। यहाँ अंजाम उसने सक्जन नहीं हैं।

वाच्चक उपन्यास कुलस्त मार्क किशन दु-भाग की कथासाधी है। श्रीक निदान श्रीक की प्राणी श्रीन के समान है। यहूदी इस उपन्यासों में परिस्थिति की मानसिकता स्वर्ण बन जाती है। उपन्यास के बारिश भी 'श्रीक' के दृढ़ता वाच्चक उपन्यास है जो विस्तार-पूर्ण है यहाँ विस्तार-विवेचन नहीं बाल के हैं, यथा: गर्भ में उगा हुआ एक बुद्धि और पारी और कब तक पुन:स्वाभाविक है। यही वाच्चकता के परी 'वैदिक बन्न कमरे' और 'कलारश्व बुज्जन के पीछे' में गार्डिय बीच के रूप में विद्वेष हर्ष व्याप्त चर्च की निर्मिति के रूप में निकलते हैं।

52-- वार्दी उषरमण, पृष्ठ, पृ. 14. 104. 148. 23. 81. 130. 162. 332।
53-- कुलस्त कुमार, गर्भ में उगा एक बुद्धि, पृष्ठ।
54-- नागाधु, पारी, पृष्ठ।
55-- रागीय राजत, कब तक पुन:स्वाभाविक।